चरक में प्रामाण्यवाद : एक अध्ययन

1– जितेन्द्र कुमार मौर्य
शोध छात्र
विकृति विज्ञान विभाग
आयुर्वेद संकाय

2– डॉ0 परमेश्वरप्प0 एस्0 ब्याडगी
एसो0 प्रोफेसर
विकृति विज्ञान विभाग
आयुर्वेद संकाय

Key Words– प्रमाण, ज्ञान, परीक्षा, सत्–असत् इत्यादि।

प्रस्तावना–

इस संसार में अनेकों दृश्य एवं अदृश्य वस्तु विद्यमान हैं। इस दृश्य एवं अदृश्य वस्तु के ज्ञान के लिए किसी साधन की आवश्यकता पड़ती हैं वह साधन प्रमाण हैं। किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान को प्रमा कहते हैं और प्रमा के करण को प्रमाण कहते हैं। प्रमाण के द्वारा ही किसी ज्ञात एवं अज्ञात वस्तु का परीक्षण किया जाता हैं। आयुर्वेद में प्रमाण को परीक्षा के नाम से जाना जाता हैं। चरक ने प्रमाण को हेतूपद से भी अभिहित किया। सुश्रुत ने प्रमाण को विज्ञानोपाय कहा हैं। ये प्रमाण बुध्दिमान व्यक्तियों के लिए हैं जिससे बुध्दि प्रदीप के समान हो जाती हैं और वस्तु को यथावत् देख सकते हैं।

आयुर्वेद में रोग, रोगी, औषध एवं चिकित्सक के समान ज्ञान के लिए प्रमाण की आवश्यकता पड़ती हैं। रोग और रोगी की परीक्षा के बिना चिकित्सा ही हो सकती। चरक ने प्रमाण के विषय में कहा हैं –

द्विविधमेव खलु सर्वं सच्चासच्च, तस्य चतुर्विधा परीक्षा– आप्तोदेशः, प्रत्यक्षम्, अनुमानं, युक्तिश्चेति।[1]

संसार के सम्पूर्ण वस्तु को दो भागो में बांटा गया हैं – सत् और असत्। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में सत् और असत् के विषय में कहा हैं –

नाऽसतो विद्यते भावो नाऽभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः।।[2]

असत् वस्तु का अस्तित्व नही होता और सद् वस्तु का कभी अभाव नही होता। इस प्रकार दोनों का तत्त्वज्ञानी पुरूषों द्वारा देखा जाता हैं। यही दृष्टिकोण महर्षि आत्रेय का भी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सत् को भाव और असत् को अभाव कहा जाता हैं। सत् उन वस्तुओं की संज्ञा हैं जिसका प्रत्यक्ष होता हैं तथा जो अनुभवगम्य हैं। न्यायदर्शन में प्रथम छः पदार्थ द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये सत् हैं अर्थात् भाव के उदाहरण हैं, और जो सातवाँ अभाव पदार्थ है वो असत् हैं। इसके चार प्रकार हैं – प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव। उस सत् और असत् की परीक्षा के चार साधन हैं – आप्तोदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान और युक्ति।

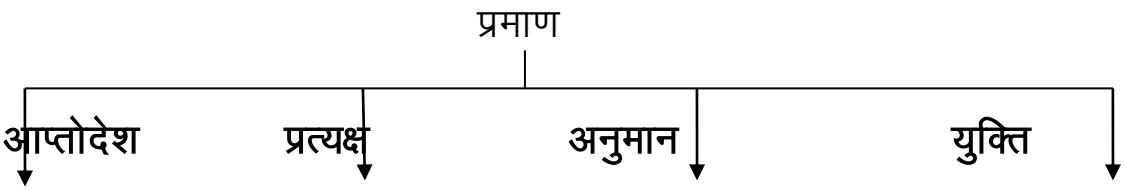

आप्तोदेश प्रमाण –

आचार्य चरक ने आप्तोदेश प्रमाण के विषय में कहा हैं –

रजस्तमोभ्यां निमुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये।
येषां त्रिकाल्ममलं ज्ञानमव्याहतं सदा।।[3]
आप्ताः शिष्टा विबुध्दास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्।
सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः।।[4]

आप्त प्रमाण को दर्शनों में शब्द प्रमाण के नाम से भी जाना जाता हैं। महर्षि चरक ने आप्त का लक्षण बताया हैं जो तप एवं ज्ञान के बल से रजो और तमोगुण से मुक्ति प्राप्त कर लिए हो, जिनको सर्वदा भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान इन तीनों कालों का सम्यक ज्ञान बिना किसी रूकावट के होता रहता हैं और जिनकी प्रज्ञा शक्ति निरन्तर चलती रहती हैं ऐसे व्यक्तियों को आप्त पुरूष कहा गया हैं। आप्त पुरूष जो भी वचन कहते हैं वे सत्य होते हैं और वे रजो व तमोगुण से मुक्त होते हैं इसलिए मिथ्यावचन नही बोलते । आप्तोदेश से सम्पूर्ण धर्मशास्त्र, स्मृति, पुराण वेदवाक्यों का ग्रहण होता हैं। आप्त पुरूष तटस्थ रहते हैं, उन्हें न किसी से प्रेम रहता हैं और न किसी से द्वेष, ऐसे पुरूष सर्वदा सत्य बोलते हैं इनकी वाणी सिध्द हो जाती हैं और जो मुख से शब्द निकलता है वह शब्द प्रमाण का रूप ग्रहण कर लेती हैं।

प्रत्यक्ष प्रमाण –

आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते।
व्यक्ता तदात्वे या बुध्दिः प्रत्यक्षं सा निरूच्यते।।[5]

हमारी इन्द्रियों का जब विषयों के साथ सन्निकर्ष होता हैं तब हमे प्रत्यक्ष ज्ञान होता हैं। जब तक इन्द्रियाँ मन में अधिष्ठित नही होती तब तक वे अपने विषयों को ग्रहण करने में समर्थ नही होती। आत्मा, इन्दिय, मन और विषयों का सन्निकर्ष प्रत्यक्ष ज्ञान के हेतू हैं। जब आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञान करने में प्रवृत्ति होती हैं तो सबसे पहले मन से सम्बन्ध स्थापित करती हैं, मन इन्द्रियों से और इन्द्रियाँ विषयों से स्थापित करती हैं। इन सब सहायक कारणों की सहायता में आत्मा को प्रत्यक्ष का ज्ञान होता हैं। आत्मन्द्रियमनोऽर्थ के संयोगसे ही शुक्ति में चाँदी का भ्रम हो जाता हैं, अतः भ्रमात्मक ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान न समझा जाय, इसलिए लक्षण में **व्यक्ता** यह विशेषण दिया गया हैं। **व्यक्ता** का तात्पर्य हैं निश्चयात्मक ज्ञान।

अनुमान प्रमाण –

प्रत्यक्षपूर्वं त्रिविधं त्रिकालं चानुमीयते।
वह्निर्निगूढो धूमेन मैथुनं गर्भदर्शनात्।।[6]
एवं व्यवस्यन्त्यतीतं बीजात् फलमनागतम्।
दृष्टवा बीजात् फलं जातमिहैव सदृशं बुधाः।।[7]

जिसका कभी प्रत्यक्ष हुआ हो पर वर्तमान काल में उसकी प्रत्यक्षतः उपलब्धि न होती हो, उसी वस्तु का अनुमान करते हैं। अनुमान किस समय होता हैं इस विषय में तर्कसंग्रहमें स्पष्ट रूप से कहा गया हैं कि जहाँ, परामर्शजन्य ज्ञान होता है वहाँ अनुमान होता हैं। फिर प्रश्न उठता हैं परामर्श क्या हैं तो बताया गया हैं – **व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः।** अर्थात् व्याप्ति के साथ पक्षधर्मता का ज्ञान रहना परामर्श कहलाता हैं। जैसे– जहॉ–जहॉ धूम रहता हैं वहॉ–वहॉ अग्नि रहती हैं। प्रत्यक्ष ज्ञानपूर्वक तीन प्रकार का तथा तीनों काल का अनुमान किया जाता हैं।

- **पूर्ववत् –**

  जहाँ कारण से कार्य का अनुमान किया जाता हैं, वहाँ पूर्ववत् अनुमान होता हैं। जैसे– मेघ को देखकर वृष्टि अर्थात् वर्षा का या बीज से होने वाले फल का अनुमान। यही भविष्यकाल का भी उदाहरण हैं।

- **शेषवत् –**

  जहाँ कार्य से कारण का अनुमान किया जाता हैं वहाँ शेषवत् अनुमान होता हैं। जैसे गर्भ को देखकर मैथुन का। यह अतीत काल के अनुमान का उदाहरण हैं।

- **सामान्योदृष्ट –**

  कार्य कारण से भिन्न अनुमान यह वर्तमानकालीन हैं। जैसे– धूम से अग्नि का अनुमान, धूम अग्नि का न कार्य हैं न कारण हैं पर अग्नि से हमेशा धूम उत्पन्न होता हैं।

युक्ति प्रमाण –

बुध्दिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्।
युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।।[8]

टनेक कारणों के संयोग से होने वाले अज्ञात भावों की उत्पत्ति समझने वाली बुध्दि अर्थात् ज्ञान का नाम युक्ति हैं। इस युक्ति का संयोग भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों में होता हैं। जिससे धर्म, अर्थ और काम इन तीनों की सिध्दि होती हैं उसे युक्ति कहते हैं। विज्ञात अथवा अविज्ञात अर्थ में भी कार्य कारणभाव का ज्ञान करना युक्ति हैं। जहाँ जल, कर्षण, बीज और ऋतु इनमें विज्ञात कार्य कारण का ज्ञान कर अविज्ञात षड्धातु– संयोग से गर्भ की उत्पत्ति की कल्पना प्रमाण रूप में की गयी हैं। गर्भ की उत्पत्ति अदृष्ट हैं अतः विज्ञात धान्य की उत्पत्ति से अविज्ञात गर्भ की उत्पत्ति का प्रामाणिक ज्ञान युक्ति प्रमाण से किया जाता हैं।

उपसंहार –

उपर्युक्त चतुर्विध परीक्षा या प्रमाण से सत् अर्थात् सत्तात्मक भाव पदार्थ और असत् अर्थात् अभाव पदार्थ इन दोनों की परीक्षा की जाती हैं। कारण यह हैं कि जिस इन्द्रिय से भाव पदार्थ घट आदि का ज्ञान होता हैं उसी इन्द्रिय से घटाभाव का भी ज्ञान होता हैं, अर्थात् चारों प्रमाणों के द्वारा किसी भी पदार्थ की सत्ता और उस पदार्थ के अभाव का भी ज्ञान होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 – त्रिपाठी,डॉ0ब्रह्मानन्द.सूत्रस्थान11/17,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन,2009;230.

2 – गीता 2/16

3 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/18,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;216.

4 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/19,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;216.

5 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/20,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;217.

6 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/21,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;219.

7 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/22,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;219.

8 – पाण्डेय,पं0काशीनाथ.सूत्रस्थान11/25,चरकसंहिता,खण्ड प्रथम.वाराणसी,चौखम्भा भारती अकादमी,2014;221.